‘हर बच्चे के हाथ पुस्तक’

के मिशन का उत्सव

वार्षिक रिपोर्ट 2024-25

मिशन के 20 वर्ष

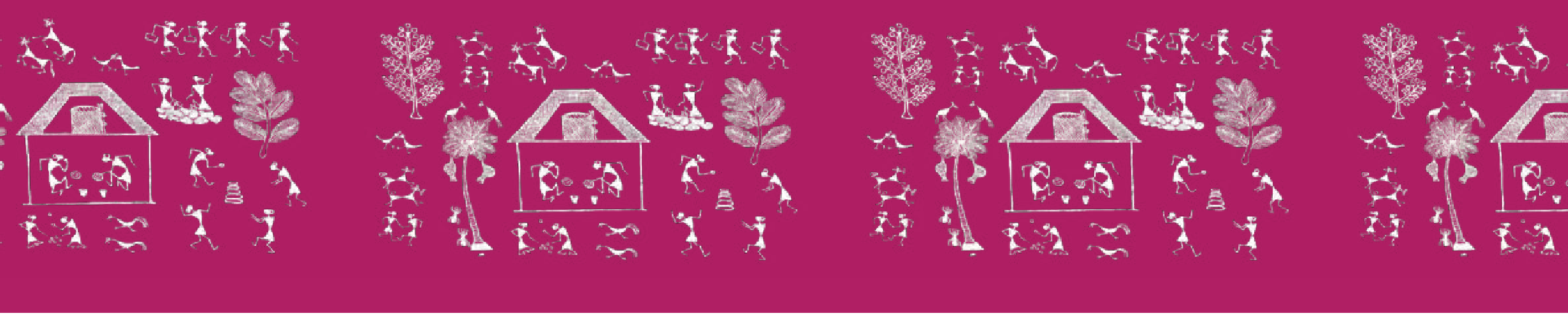

चिंतन

पठन एक बुनियादी कौशल है और सक्षमता की नींव है। यह बच्चों के प्रदर्शन को प्रभावित करता है और स्कूल में उनकी उपलब्धि के स्तर पर भी इसका गहरा असर पड़ता है। पठन क्षमता हर विषय को समझने योग्य बनाती है। 01 जनवरी 2004 को हमने 'प्रथम बुक्स' का पंजीकरण एक सार्वजानिक दानशील न्यास (पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट) के रूप में किया, जिसका मिशन था, 'हर बच्चे के हाथ में पुस्तक'।

इस लक्ष्य का अर्थ यह है कि हमें ऐसे तरीके खोजने थे, जिनसे निश्चित किया जा सके कि किताबें आकर्षक हों, उनमें स्थानीय संदर्भों से जुड़ी सामग्री हो और वे इतनी सस्ती हों कि सबसे गरीब बच्चे भी उन्हें पा सकें, चाहे वे खुद खरीदें या लाइब्रेरी, अन्य गैर-मुनाफा संस्थाओं या शिक्षा विभागों के माध्यम से पुस्तकें उन तक पहुँचें।

इसे साकार करने के लिए हमने इन वर्षों में अनेक तरीके आज़माए हैं :

- हमने प्रिंटरों के साथ मिलकर यह पता लगाने के लिए काम किया कि उत्पादन की लागत को कैसे कम किया जाए, खासतौर पर इसलिए, क्योंकि हम कई भारतीय भाषाओं में किताबें छाप कर रहे थे (और अब भी छाप रहे हैं)।
- हमने कहानी कार्डों से लेकर पुस्तकों तक, मोड़ने जा सकने वाले वॉल हैंगिंग से लेकर कागज़ के सबसे उपयुक्त आकार चुनने तक, कई तरह के आकार-प्रकार के प्रयोग ताकि कागज़ की बर्बादी (और उससे जुड़ी लागत) को कम किया जा सके।
- स्मार्टफोन और टैबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों का तेज़ी से प्रसार होने से हमें अपनी सामग्री को ऑनलाइन उपलब्ध कराने की दिशा में काम करना पड़ा और हमने अपने 'स्टोरीवीवर' प्लेटफॉर्म के ज़रिए इस काम को बहुत ही शानदार ढंग से पूरा किया है।

इन प्रयासों ने दो महत्त्वपूर्ण बातों को और भी बल दिया- पहली, एक पुरानी कहावत का बदला हुआ रूप है कि 'एक बच्चे को शिक्षित करने के लिए पूरे गाँव की ज़रूरत होती है।' अगर सरकार, समाज और बाज़ार के बीच तालमेल हो तो हर आखिरी बच्चे के हाथों में किताबें पहुँचाना संभव है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण बिहार में वर्ष 2008 में देखने को मिला, जब राज्य सरकार के साथ मिलकर हमने मात्र 49 दिनों में बिहार के लगभग 54,000 स्कूलों तक 37.5 लाख पुस्तकें और 37.5 लाख कहानी कार्ड पहुँचा दिए। इस तरह से हम लगभग 55 लाख बच्चों तक पहुँच पाए!

आज के इंटरनेट के इस दौर में इसे मामूली सी बात माना जा सकता है, लेकिन उस समय चुनौतियाँ काफी बड़ी थीं। प्रथम बुक्स ने इतने जटिल काम की योजना बनाने और विशेष रूप से अपनी छोटी-सी टीम के साथ, उसे अंजाम देने में अपनी दृढ़ता और प्रतिबद्धता का शानदार परिचय दिया! ज्यों-ज्यों हम तकनीकी के युग में आगे बढ़े, हमने 'मिस्ड कॉल दो, कहानी सुनो' जैसे नए मॉडल शुरू किए और 'स्टोरीवीवर' जैसे जटिल परंतु उपयोग में सरल प्लेटफॉर्म भी बनाए।

हमने लेखकों, चित्रकारों, सामग्री और डिलीवरी सिस्टम का एक शानदार परिवेश तैयार किया है और हम हर साल लाखों, शायद करोड़ों बच्चों तक पहुँचने के लिए तैयार हैं। यह हमें प्रश्नों के अगले स्तर तक ले जाता है- इस ज़ोरदार कोशिश का क्या प्रभाव है और हम वास्तव में इसको मापेंगे कैसे (सुनी-सुनाई बातों से आगे बढ़ते हुए?)

इस व्यापक प्रयास के प्रभाव का आकलन क्या है, तथा इस प्रभाव को केवल अनुभवजन्य (किस्सों पर आधारित) साक्ष्यों से आगे बढ़कर किस प्रकार वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक रूप से मापा जा सकता है? हमने इस दिशा में कदम उठाने शुरू कर दिए हैं और अगले कुछ साल 'प्रथम बुक्स' के लिए बड़े रोमांचक साबित होने वाले हैं। हमारी टीम इस चुनौती के लिए पूरी तरह तैयार है और वह राज्य सरकारों, समाज-सेवियों व दानदाताओं, अन्य गैर-मुनाफा संस्थाओं और व्यापक स्तर पर समुदायों के साथ मिलकर काम करने को इच्छुक है। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमने कई परियोजनाएँ तैयार की हैं और संस्थापक ट्रस्टी के तौर पर, मैं इनके परिणामों को देखने के लिए बेहद उत्सुक हूँ।

–अशोक कामथ, संस्थापक ट्रस्टी, प्रथम बुक्स

जब तत्कालीन 'प्रथम' संस्था से जुड़े कुछ लोगों ने बाल साहित्य में व्याप्त भारी कमी को भरने के उद्देश्य से एक बच्चों के प्रकाशन की शुरुआत करने का निर्णय लिया, तब मैंने अशोक कामथ और रेखा मेनन से इस संस्थापक टीम में शामिल होने का आग्रह किया। और फिर, 1 जनवरी 2004 को हम सब ने मिलकर 'प्रथम बुक्स' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था भारतीय भाषाओं में और स्थानीय विषय-वस्तु पर आधारित मज़ेदार व विविध प्रकार की पुस्तकें तैयार करके, सभी बच्चों के लिए पढ़ने के आनंद को सुलभ बनाना। और हमने ऐसा कर दिखाया!

–रोहिणी निलेकणी, सह-संस्थापक

भारत के बच्चों को कहानियों का आनंद प्रदान करने के अपने महत्वाकांक्षी विज़न से लेकर, दो दशकों तक स्थानीय संदर्भों से जुड़ी सामग्री वाली सस्ती पर उच्च-गुणवत्ता वाली कहानियों की किताबें और कार्ड वितरित करने की शानदार हकीकत तक और सामाजिक कल्याण व बड़े पैमाने पर काम के लिए तकनीकी के इस्तेमाल की ताकत को शुरू में ही पहचानने से लेकर लाखों पाठकों तथा कई भाषाओं के माध्यम से दुनियाभर में पहुँच बनाने तक, यह एक अद्भुत यात्रा रही है। उस टीम को बहुत-बहुत बधाई जिसने इस सपने को साकार कर दिखाया और पिछले 20 वर्षों की यह यात्रा तय हुई- लाखों बच्चे आप सभी को धन्यवाद दे रहे हैं!

–रेखा मेनन, सह-संस्थापक

एक टीम के तौर पर और एक व्यक्ति के तौर पर, जब भी मैंने किसी नए विचार या खोज का मूल्यांकन किया है, तो उसे सदा अपने मिशन के नज़रिए से ही परखा है। क्या इससे उन अधिक बच्चों तक किताबें पहुँच पाएँगी जिन्हें उनकी ज़रूरत है? क्या इससे और अधिक बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद मिलती है? क्या यह पढ़ने के माध्यम से बच्चों के लिए नए दरवाज़े खोलने का काम करता है? हमने यही लक्ष्य रखा था और हम हमेशा यही करते रहेंगे। आने वाले कुछ दशकों में किताबें बदल जाएँगी और पाठकों तक पहुँचने के तरीके भी बदलेंगे, लेकिन पुस्तक व पाठक के बीच का वह जादू, जिसे केवल शब्द और चित्र ही रच सकते हैं, वह सदा हमारा पथ प्रदर्शन करता रहेगा।

–सुज़ैन सिंह, पूर्व-अध्यक्ष एवं ट्रस्टी

पिछले दो दशकों में, प्रथम बुक्स ने अपने अग्रणी नवाचारों के माध्यम से बच्चों की किताबों की दुनिया में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई है। हर बच्चे तक, चाहे उसकी पृष्ठभूमि या परिस्थिति कैसी भी हो, उच्च गुणवत्ता, कम मूल्य और कई भाषाओं में उपलब्ध किताबें, विभिन्न प्रारूपों व माध्यमों से पहुँचाने की हमारी प्रतिबद्धता ने भारत के साथ ही विश्व में बड़े पैमाने पर हमारी पहुँच व प्रभाव को सुनिश्चित किया है।

हमने बहुभाषी कहानियों की उस शक्ति को देखा है, जो कल्पना को जगाती है, सहानुभूति को बढ़ावा देती है,पढ़ने के प्रति प्रेम जागृत करती है और जिसके दूरगामी व असर कारक प्रभाव होते हैं। इस वर्षगाँठ को मनाते हुए, हम उन लेखकों, चित्रकारों, अनुवादकों, स्वयंसेवकों, भागीदारों, दानदाताओं और समर्थकों के समुदाय के सहयोग को स्वीकारना, उनको सराहना तथा उन्हें धन्यवाद देना चाहेंगे, जिन्होंने हमारे मिशन को आगे बढ़ाने में मदद की है। यह आपका निरंतर समर्थन ही है, जिसने हमें लाखों बच्चों तक पहुँचने और सकारात्मक प्रभाव के लिए सक्षम बनाया है, विशेष रूप से उन बच्चों तक जिन्हें अब तक पर्याप्त अवसर नहीं मिले हैं या जो अवसरों से पूरी तरह वंचित रहे हैं।

–आर श्रीराम, अध्यक्ष

प्रत्येक बच्चे के लिए पठन-संस्कृति के निर्माण के

बीस साल

जब प्रथम बुक्स ने भारत के प्रत्येक बच्चे के लिए पढ़ने का आनंद को सुलभ बनाने का बीड़ा उठाया, तब हमने तीन मुख्य कमियों को दूर करने से शुरुआत की- बच्चों की अपनी भाषाओं में सस्ती और उच्च गुणवत्ता की किताबों की कमी थी, स्कूलों के पास पाठ्य-पुस्तकों के अलावा और लगभग कोई अन्य पुस्तकें नहीं थीं और समुदायों में पठन-पाठन को बढ़ावा देने के लिए सीमित बुनियादी ढाँचा था।

तो हमने चीज़ें बदलना शुरू कर दिया।

पिछले 20 वर्षों के इस सफर ने हमें बिहार के ज़िला कार्यालयों से लेकर मणिपाल स्थित प्रिंटिंग प्रेसों तक, पूरब की गारो पहाड़ियों से लेकर पश्चिम के कच्छ के रण तक पहुँचाया है। चेहरों, जगहों और कहानियों के इस लंबे सफर के दौरान, तीन मार्गदर्शक सिद्धांतों ने एक ऐसे भारत के लिए हमारे काम को आधार दिया है, जिसे पढ़ना बेहद पसंद है :

1. सृजन: प्रथम बुक्स की कैटलॉग में 7,000+ टाइटल हैं, जो भारतीय रचनाकारों की भारतीय कहानियाँ हैं- ये कहानियाँ बच्चों को सपने देखने, सीखने और आगे बढ़ने में मदद करती हैं।

2. पहुँच: कहानियों के माध्यम से हर बच्चे तक पहुँचने के लिए, हम सरकारी तंत्र के साथ मिलकर विस्तार करते हैं, सामुदायिक नेटवर्कों के ज़रिए पहुँच को और गहरा बनाते हैं और बाज़ार के माध्यमों का उपयोग करके वितरण को निरंतर तथा विस्तारित करते हैं।

3. उपयोग: अधिगम में कमियों को दूर करने के लिए कहानी-आधारित कार्यक्रम डिज़ाइन करके हम अपनी चित्र-पुस्तकों के विशाल संग्रह का लाभ उठाते हैं।

अपने पहले दशक में हमने एक किफायती प्रकाशन मॉडल, एक बहुभाषी निर्माण पाइप लाइन और पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर वितरण परिचालन क्षमता विकसित की।

- वर्ष 2006 तक पूरे भारत में हिंदी, बंगाली, गुजराती, असमिया, बोड़ो, तमिल, उर्दू और पंजाबी जैसी भाषाओं में लगभग एक करोड़ स्टोरीकार्ड बाँटे गए।
- 2008 में बिहार राज्य सरकार के सहयोग से हमने, बिहार के लगभग 54,000 स्कूलों में कुल 49 दिनों में 37.5 लाख किताबें और 37.5 लाख स्टोरीकार्ड बाँटे, जिससे 55 लाख बच्चों तक हमारी पहुँच बनी।
- वर्ष 2012 तक हमारी सचित्र किताबें 21 राज्यों तक पहुँच चुकी थीं। ये लद्दाख के सामुदायिक केंद्रों, असम और मेघालय के चाय बागानों और ग्रामीण गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक तथा झारखंड के सरकारी स्कूलों तक पहुँच रही थीं।

2004 से 2014

प्रत्येक बच्चे के लिए किफ़ायती, बहुभाषी कहानियों के रास्ते बनाना

चित्र-पुस्तकों के माध्यम से जलवायु क्रांतिकारियों को प्रेरित करना

हमारी पहली पुस्तक ओरियोल हेनरी कृत ‘कावेरी’ (2009) ने, जिसकी फोटो क्लेयर आर्नी ने लिए थे, दिखाया कि कैसे चित्र पुस्तकें धरती के लिए कुछ करने की प्रेरणा दे सकती हैं।

इस पुस्तक ने देश में “हमारी नदियों को बचाओ, पानी बचाओ” अभियान की शुरुआत की प्रेरणा दी, जिसके परिणामस्वरूप जल संसाधनों की सुरक्षा के लिए 1,22,000 संकल्प लिए गए।

अपनी आवाज़ वाली कहानियों को सहेजना

आदिकहानी शृंखला के साथ ‘प्रथम बुक्स’ ने पहली बार आदिवासी भाषाओं के क्षेत्र में कदम रखा। इस शृंखला के तहत 10 किताबें और 4 गीत-कार्ड तैयार हुए, जिन्हें ओडिशा के आदिवासी समुदायों के साथ मिलकर आयोजित कार्यशालाओं में सह-निर्मित किया गया था। सौरा शैली में चित्रित और कंटेंट पार्टनर ‘इग्नस ईआरजी’ के सहयोग से विकसित इस शृंखला को ‘पब्लिशिंग इनोवेशन ऑफ द ईयर अवार्ड 2015’ से सम्मानित किया गया।

जैसे-जैसे हमारा काम आगे बढ़ा, हमने महसूस किया कि सिर्फ कुछ बनाना ही काफी नहीं था, कहानियों को अलग-अलग जगहों, भाषाओं, व्यवस्थाओं और समुदायों तक पहुँचना था। 2014 में हमने पहुँच के लिए नए रास्ते बनाने शुरू किये , जिन्हें डिजिटल ढाँचे और सामूहिक भागीदारी से बल मिला। दो परिवर्तनकारी पहलें सामने आईं:

'डोनेट-ए-बुक' हमारा क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म, उन समुदायों को जहाँ लाइब्रेरी की ज़रूरत हो ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं से जोड़ता है, जो उनकी मदद करने को तैयार हैं।

पहले ही वर्ष इसने लगभग 50,000 किताबें बाँटने के लिए फंड जुटाने में मदद की, जिससे देश के दूर-दराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले दस लाख से अधिक बच्चों तक किताबें पहुँचीं। तमिलनाडु के ग्रामीण इलाकों में 'इरुला' जनजाति की लड़कियों के लिए फंड जुटाने वाले स्वयंसेवियों से लेकर महाराष्ट्र के 'कोलवाड़ी' जैसे गाँवों के स्कूलों तक, समुदायों ने पढ़ने की जगह बनाने की ज़िम्मेदारी खुद उठानी शुरू कर दी। इससे देश के हर बच्चे तक कहानियों की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए 'साझी ज़िम्मेदारी' का एक आंदोलन शुरू हो गया।

प्लेटफॉर्म, साझेदारियों और समुदाय के माध्यम से पहुँच का विस्तार

2014 से 2018

स्टोरीवीवर ने बड़े पैमाने पर पहुँच को नए सिरे से परिभाषित किया। 800 ओपन-लाइसेंस्ड कहानियों से शुरुआत करते हुए आज यह 'डिजिटल पब्लिक गुड' 380 से अधिक भाषाओं में 60,000 से भी ज़्यादा कहानियों का कोष है। कहानियों के लगातार नए अनुवाद होते रहते हैं, उन्हें स्थानीय संदर्भों के अनुरूप ढाला जाता है और बिना किसी लागत से जुड़ी बाधा के पूरी दुनिया में प्रेषित किया जाता है।

PRATHAM BOOKS donate-a-book

PRATHAM BOOKS storyweaver

सामुदायिक स्वयंसेवकों ने स्टोरीवीवर के माध्यम से हिंदी की चित्र-पुस्तकों का गोंडी में अनुवाद किया, जिससे मनीषा जैसे बच्चों को जीवन में पहली बार अपनी मातृभाषा में पुस्तक का उपहार मिला।

'डोनेट-ए-बुक' प्लेटफॉर्म पर 'मैंगो ट्री' द्वारा आयोजित एक क्राउडफंड अभियान से चित्र-पुस्तकों को प्राप्त करते बच्चे।

भारत को पढ़ता हुआ भारत बनाने की दिशा में 'डोनेट-ए-बुक' के 10 वर्षों के कार्य को देखने के लिए स्कैन करें!

2020

कहानियों को सीखने के माध्यम में बदल कर, सिस्टम-स्तर पर बदलाव लाना

जब महामारी के कारण पूरे देश में कक्षाएँ ठप हो गईं, तब एस.सी.ई.आर.टी. महाराष्ट्र और यूनिसेफ की साझेदारी में, प्रथम बुक्स ने 1,00,000 स्कूलों और आँगनवाड़ियों में 'गोष्टीचा शनिवार' (कहानियों का शनिवार) कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके ज़रिए यह सुनिश्चित किया गया कि बच्चे कहानियों के व्यवस्थित सत्रों के माध्यम से अपनी पढ़ाई को जारी रख सकें।

शाम्भवी पाटिल, महाराष्ट्र के पालघर के एक ज़िला परिषद स्कूल की पहली कक्षा की छात्रा है। वह बच्चों में होने वाले मधुमेह से जूझ रही थी और पढ़ाई में उसकी कोई रुचि नहीं थी। 'गोष्टीचा शनिवार' कार्यक्रम के ज़रिए उसने हर शनिवार को अपनी शिक्षिका की मदद से रंग-बिरंगी और दिलचस्प कहानियों की किताबें पढ़ना शुरू किया।

समय के साथ-साथ, शाम्भवी ने प्रश्न पूछना और कहानियों पर चर्चा करना शुरू कर दिया और वह कक्षा में एक सक्रिय, उत्साही छात्रा बन गई।

बड़े पैमाने पर बुनियादी शिक्षा को मज़बूत बनाना

महामारी के बाद हमने 'निपुण भारत मिशन' और राष्ट्रीय अधिगम लक्ष्यों के अनुरूप एक 'बुनियादी साक्षरता कार्यक्रम' शुरू किया। इसका उद्देश्य कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों को 'पढ़ना सीखने' से आगे बढ़कर 'सीखने के लिए पढ़ने' की ओर बढ़ने में मदद करना था। हिंदी और मराठी भाषाओं में तैयार किया गया यह कार्यक्रम, कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा और शिक्षण प्रणाली में इसके उपयोग, दोनों में ही सहायक है। राज्यों के शिक्षा विभागों के साथ मिलकर चलाए जा रहे इस कार्यक्रम के ज़रिए, छत्तीसगढ़ में 30,000 प्राथमिक स्कूलों और 26 लाख बच्चों तक पहुँच बनाई गई है तथा महाराष्ट्र में 42,000 स्कूलों व 40 लाख बच्चों तक हमारी पहुँच बनी है।

हमारे बुनियादी सीखने के कार्यक्रमों के तहत हुए फील्ड अध्ययनों में फोनोलॉजिकल जागरूकता, शब्द पढ़ने और समझने की क्षमता में 15–40 प्रतिशत अंकों का सुधार देखा गया है। इसके साथ ही, स्वयं कहानी पढ़ने की क्षमता में भी 44% से बढ़कर 82% की वृद्धि हुई है।

अब तक हमारे हाइब्रिड कहानी-आधारित सीखने के कार्यक्रम 72,000 स्कूलों में लागू किए जा चुके हैं, जिनसे लगभग 70 लाख बच्चे लाभान्वित हुए हैं।

STEM तक पहुँच के माध्यम के रूप में कहानियों का उपयोग

हमारा कहानी-आधारित तरीका अब STEM (स्टेम- विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी और गणित) तक फैल गया है। हमारा 'स्टेम विथ स्टोरीज़' कार्यक्रम जो 200 से अधिक ऐसे पाठ्यक्रम-अनुरूप चित्र-पुस्तकों पर आधारित है तथा वैज्ञानिक जिज्ञासा को जगाने के साथ-साथ शिक्षकों के प्रशिक्षण को साथ जोड़कर, शुरुआती कक्षाओं में स्टेम विचारधारा को विकसित करता है।

राजस्थान के कोटा में सरकारी स्कूलों में किए गए एक पायलट अध्ययन में, छात्रों ने कार्यक्रम से पहले और बाद में स्टेम की समझ में 33 प्रतिशत अंकों की वृद्धि (42% से 75%), व्यावहारिक स्टेम कौशल में 28 अंकों की बढ़त और सीखने की मानसिकता में 32 अंकों का सुधार दर्ज किया।

चित्र-पुस्तकों के माध्यम से लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ना

बच्चों को ऐसी कहानियों की ज़रूरत होती है, जो इस विश्वास को बल दें कि वे चाहे किसी भी लिंग के हों, वे जो चाहे वो बन सकते हैं। सीमित सोच और लिंग से जुड़ी पारंपरिक भूमिकाओं का जवाब देने के लिए हमने कहानियों पर आधारित एक सीखने का कार्यक्रम तैयार किया है, जिसमें ऐसे मुख्य पात्र हैं, जो लिंग से जुड़ी पारंपरिक भूमिकाओं को चुनौती देते हैं।

यूनिसेफ की 'लिंग संभव' पहल के तहत प्रथम बुक्स ने 'ओपन बुक्स, ओपन डोर्स, ओपन माइंड्स- कहानियों के ज़रिए लैंगिक बदलाव' कार्यक्रम शुरू किया। यह कार्यक्रम पहली से पाँचवीं कक्षा के बच्चों में लैंगिक समानता की वकालत करने के लिए किताबों की ताकत का इस्तेमाल करता है।

महाराष्ट्र के धाराशिव में, जहाँ इस पायलट प्रोजेक्ट को लागू किया गया था, शुरुआती आकलन में यह सामने आया कि 51% लड़कियों का मानना था कि दोनों लिंगों के लोग पुलिस अधिकारी बन सकते हैं। वहीं, अंतिम आकलन में यह आँकड़ा बढ़कर 93% हो गया।

यूनिसेफ महाराष्ट्र के साथ हमारे पायलट कार्यक्रम की 'इम्पैक्ट फिल्म' देखने के लिए स्कैन करें।

20

TWENTY YEARS OF PRATHAM BOOKS

एक दृष्टि में

7000+ प्रकाशित चित्र-पुस्तकें

32+ मुद्रित भाषाएँ

380+ समर्थित भाषाएँ

~200K सरकारी स्कूलों तक पहुँच

35+M प्रकाशित चित्र-पुस्तकें

~5000 स्थानीय साझेदार

10+M डिजिटल उपयोगकर्ता

250M डिजिटल पाठक

12+ सरकारी साझेदारी पर आधारित हस्तक्षेप

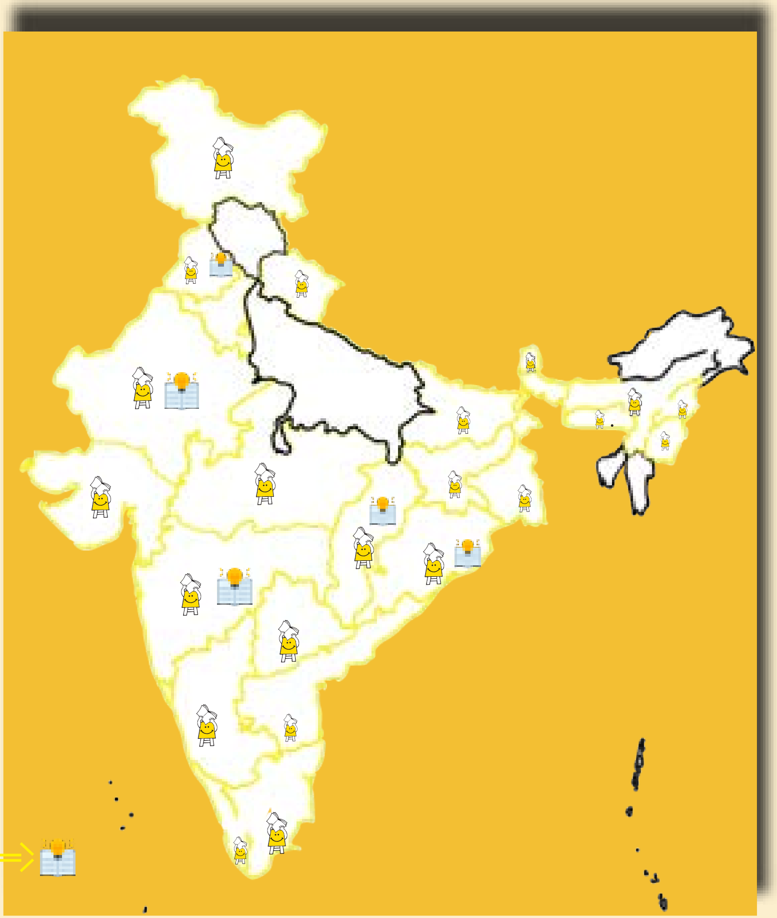

हमारी चित्र-पुस्तकें 26 भारतीय राज्यों और
6 केंद्र-शासित प्रदेशों में उपलब्ध हैं।

सर्वेक्षण का वर्ष

2024 में हमने एक संगठन के तौर पर अपनी 20वीं वर्षगाँठ वह काम करके मनाई, जो हम उत्कृष्ट तरीके से कर सकते हैं- भारत में एक आनंदमय और समावेशी पठन संस्कृति के निर्माण की दिशा में काम करना।

चित्र-पुस्तकों का उत्सव

हमारी संपादकीय टीम दृश्य साक्षरता को बढ़ावा देने के काम में सबसे आगे रही है। ‘चूहा बनाम बिल्ली’ (अरुंधति वेंकटेश द्वारा लिखित और कनातो जिमो द्वारा चित्रित चित्र-पुस्तक), ‘यह भूमि ही मेरा विद्यालय’ (दादाजी खोब्रागडे की जीवनी, जिसे योगेश मैत्रेय ने लिखा और भार्गवी रुद्रराजु ने चित्रित किया), ‘कबड्डी, कबड्डी’ (कबिनी अमीन की एक बिना शब्दों की चित्र-पुस्तक) और ‘ढूँढ़ों तो जानें’ (हितेश सोनार की एक प्यारी सी स्पॉटिंग बुक) जैसी किताबों के ज़रिए हमने विभिन्न प्रकार की बच्चों की उत्कृष्ट चित्र-पुस्तकों के सृजन की दिशा में काम किया है।

हमने राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान एनआईडी, सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिज़ाइन एंड टेक्नोलॉजी और क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) जैसे विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में वर्कशॉप तथा हैकाथॉन आदि आयोजित करके अगली पीढ़ी के सृजनकर्ताओं में दृश्य साक्षरता को बढ़ावा देने का भी अभ्यास किया।

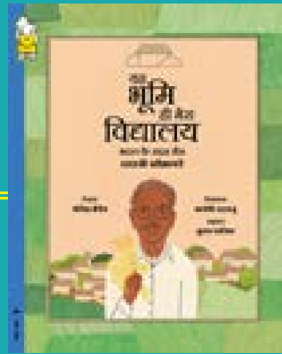

चित्र-पुस्तकों में स्वदेशी कला रूपों की खोज

प्रथम बुक्स ने भारत की छह आदिवासी महिला कलाकारों को 'हम क्या चाहते हैं' नामक एक चित्र-पुस्तक के सृजन के लिए एक वर्कशॉप में आमंत्रित किया। इस किताब में उन्होंने अपने सपनों और आकांक्षाओं को छह पारंपरिक कला शैलियों, *पटचित्र* से लेकर *फड़* तक, के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

'विश्व कला दिवस' के अवसर पर यह पुस्तक देशभर में बच्चों के साथ हुए सत्रों का मुख्य आकर्षण बन गई। इसने बच्चों को कला के माध्यम से अपने सपनों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया। बच्चों ने इन सत्रों में बड़े ही उत्साह और गर्मजोशी के साथ भाग लिया। 9 वर्षीया यशिका ने रंगों के माध्यम से अंतरिक्ष की कल्पना की। 10 वर्षीया सौम्या ने एक विख्यात लेखिका बनने की इच्छा व्यक्त की ताकि उसका जन्मदिन ही 'विश्व लेखक दिवस' के रूप में मनाया जाए। 11 वर्ष की आरोही ने चाहा कि सूरज उसका सबसे अच्छा मित्र बन जाए और 11 साल की नविका ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अपने दृढ़ संकल्प को एक चित्र के रूप में उकेरा।

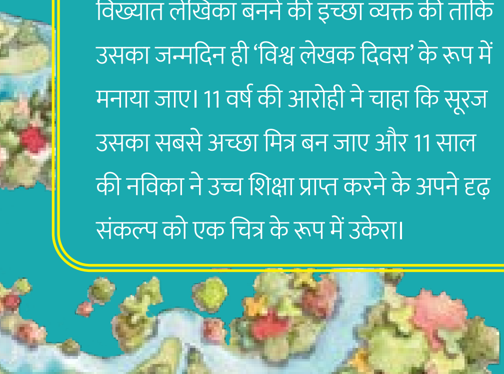

चित्र-पुस्तकों के माध्यम से सीखना

जहाँ हमने अपर्णा कपूर और प्रिया कुरियन की 'चींटियों भरा चाँद', लावन्या कार्तिक की और पंकज सैकिया की 'अक्कड़ बक्कड़ गोलम गोली', असमां नूर की 'नीलू की ज़ुबैदा' और पारो आनंद और डेविड याम्बेम की 'मैं बिल्ली नहीं हूँ' जैसी मज़ेदार और अच्छी किताबें बनाना जारी रखा है, वहीं हमने सोशल और इमोशनल लर्निंग वाली चित्र-पुस्तकों की अपनी सूची को विस्तार दिया। ये किताबें बच्चों को सरल लेकिन दिल को छू लेने वाली कहानियों के ज़रिए अपनी भावनाओं को समझने में मदद करती हैं। इसमें पहली बार पुस्तक सृजन का प्रयास करने वाली रिशिता लोइतोंग्बम की बिना शब्दों की पुस्तक 'शर्मीली थोइथोइ' और ओइन्द्री सी द्वारा चित्रित जयराज सिंह की पुस्तक 'किताबों से भरा आशियाना' शामिल हैं। इसके इलावा, कोमिला रावते द्वारा लिखित और शुभश्री माथुर द्वारा चित्रित 'चिक-चिक लड़की', सोमक घोषाल की लिखी और प्रोइती रॉय द्वारा चित्रित 'पीकू और उसकी जादुई पिशी', तथा श्रीजा राव की लिखी और कृत्तिका सुसर्ला द्वारा चित्रित 'तारा के अंदर की रोशनी' जैसी पुस्तकें भी हैं, जो हमारी आस-पास की दुनिया को बड़े ही हमदर्दी भरे अंदाज़ में प्रस्तुत करती हैं। दुनिया में बढ़ती हिंसा को देखते हुए हमने शांति पर भी एक किताब छापी है, जिसका नाम है 'एक ही आकाश तले सपने', जिसे फॉस्टो आर्य डी सैंटिस ने लिखा है और ओगिन नयम ने चित्रित किया है।

प्रथम बुक्स का ऐसी सचित्र किताबें प्रकाशित करने का एक लंबा इतिहास रहा है जो बच्चों को वैश्विक जलवायु संकट और पर्यावरण की रक्षा के महत्व को समझने में मदद करती हैं। इस वर्ष हमने भारत में संरक्षण प्रयासों पर केंद्रित दो किताबें प्रकाशित कीं जिनमें राधा रंगराजन द्वारा लिखित और राजीव आइप द्वारा चित्रित 'पैंगोलिन के रखवाले', और मीनू थॉमस द्वारा लिखित और रोहित केलकर द्वारा चित्रित 'हमारा जादुई बम्ब' शामिल हैं। प्रथम बुक्स 'ट्रायलॉग डेज़-प्लैनेटरी हेल्थ फ्रॉम डिफरेंट पर्सपेक्टिव्स : माइंड द गैप' का भी हिस्सा था, जिसका आयोजन बेंगलुरु में हुआ था। भारत, स्विट्जरलैंड और युगांडा के वैज्ञानिक तथा कलाकार पृथ्वी के बेहतर स्वास्थ्य के लिए अपनी उम्मीदें साझा करने के लिए एक साथ आगे आए और उनके प्रयासों को 'वन अर्थ : प्लैनेटरी हेल्थ फॉर ऑल' नामक एक सचित्र पुस्तक का आकार मिला।

चित्र–पुस्तकों के माध्यम से STEM सीखना

प्रथम बुक्स के स्टेम चित्र-पुस्तकों के बड़े कैटलॉग का मकसद कहानियों की ताकत से स्टेम विषयों में रुचि, खोज व जुड़ाव पैदा करना है। हमने छत्तीसगढ़ में समग्र शिक्षा अभियान के साथ मिलकर काम किया, ताकि हमारी कहानियों पर आधारित सीखने की रणनीतियों को राज्य के माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए बने रेमेडियल कार्यक्रम में शामिल किया जा सके। आने वाले नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एनएएस) को देखते हुए, विभाग ने इसे शुरुआती कक्षाओं के विज्ञान और गणित में धारणाओं की स्पष्टता के लिए एक अहम ज़रिया माना। इस सहयोग के तहत हमने पूरे राज्य में 5,000 शिक्षकों को स्टेम चित्र-पुस्तकों का उपयोग करने का प्रशिक्षण दिया ताकि वे छात्रों में वैज्ञानिक जिज्ञासा को जगाने में मदद कर सकें।

"प्रथम बुक्स की स्टेम कहानियों ने बच्चों के लिए कॉन्सेप्ट्स को जल्दी समझना आसान बना दिया है। उदाहरण के लिए, *'छुपन छुपाई!'* कहानी ने, जिसे संविदा वेंकटेश ने लिखा है और संध्या प्रभात ने चित्रित किया है, मेरे छात्रों को घटा की इतनी स्पष्ट समझ दी कि जिसे समझाने में मुझे शायद छह महीने लग जाते।"

–श्रीमती सीमा आचार्य, शिक्षिका, राजकीय विद्यालय, कोटा

भाषाओं का उत्सव

इस बात में कोई संशय नहीं है कि बच्चे उस भाषा में सबसे अच्छी तरह पढ़ना सीखते हैं, जिसमें वे बोलते-चालते हैं, सोचते हैं और सपने देखते हैं। पिछले दो दशकों में हमने 32 से ज़्यादा भारतीय भाषाओं में सचित्र पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें मुख्यधारा की और स्वदेशी, दोनों तरह की भाषाएँ शामिल हैं। और हम अपने डिजिटल प्लेटफार्म स्टोरीवीवर पर 370 से अधिक भाषाओं में सचित्र पुस्तकें उपलब्ध करवाना जारी रखा हुआ है।

पिछले एक वर्ष में हमने 24 नई किताबें प्रकाशित कीं, जिनमें से आठ किताबें 'भाषा-केंद्रित' थीं- कन्नड़, मराठी और हिंदी में, जिन्हें दीपा भास्ती, कोल्लीगला शर्मा, माधुरी पुरंदरे और वसीम बारी मानेर जैसे रचनाकारों ने रचा था। इन कहानियों का अनुवाद अंग्रेज़ी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुष्का रविशंकर, जयंत कैकिनी और श्रीनाथ पेरु जैसे पुरस्कृत लेखकों ने किया है।

मातृभाषाओं में बच्चों के लिए उच्च-गुणवत्ता वाला साहित्य उपलब्ध करवाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, इस वर्ष हमने 130 से अधिक अनुवादों को संभव बनाया। इसमें विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया गया और हमने असमिया व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में 50 से अधिक कहानियाँ जोड़ीं। हमने भारतीय भाषाओं के बीच सीधे अनुवाद करके और कुशल अनुवादकों का एक व्यापक नेटवर्क तैयार करते हुए अपने 'भाषा-प्रथम' दृष्टिकोण का विस्तार किया। विश्वविद्यालयों के भाषा विभागों और शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ के सहयोग ने और अधिक शिक्षकों और लाइब्रेरियनों को पुस्तकों का अनुवाद करने को प्रोत्साहित किया। 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर हमने एक्स्टेप के 'बचपन मनाओ' अभियान के साथ साझेदारी में एक स्टोरीवीवर कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें 250 से अधिक प्रतिभागियों को बच्चों के लिए विभिन्न स्तरों की चित्र-पुस्तकों का अनुवाद करने का प्रशिक्षण दिया गया।

मातृभाषाओं में प्रासंगिक साहित्य तक पहुँच का विस्तार

इस वर्ष प्रथम बुक्स ने भारत में फ्रेंच इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर, युवापाठकों के लिए गरीबी और असमानता पर पुस्तकों की एक नई श्रृंखला तैयार की है। इस श्रृंखला का नाम 'पुअर इकोनॉमिक्स फॉर किड्स' है। नोबेल पुरस्कार विजेता एस्थर डुफ्लो ने इन पुस्तकों को लिखा है और शयेन ओलिवियर ने इनका चित्रांकन किया है। यह श्रृंखला पाँच भारतीय भाषाओं, मराठी, हिंदी, कन्नड़, तमिल और मलयालम में उपलब्ध है।

चित्रकार शयेन ओलिवियर और लेखिका एस्थर डुफ्लो अपनी किताबों की श्रृंखला के क्रमशः मराठी और मलयालम अनुवादों को थामे हुए हैं।

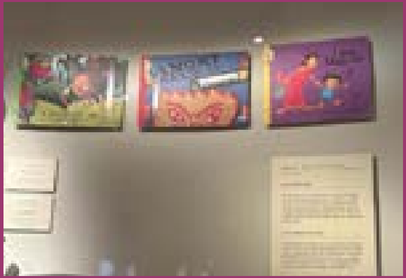

"जब मैंने नोबेल पुरस्कार जीता तो मुझसे नोबेल संग्रहालय को दान करने के लिए कोई चीज़ देने को कहा गया। मैंने 'प्रथम बुक्स' को बहुत सारी किताबें देने का फैसला किया, क्योंकि पूरे भारत में बच्चों को पढ़ने में मदद करने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मुझे गर्व है कि अब, मेरा अपना काम भी 'प्रथम बुक्स' में शामिल है और मुझे उम्मीद है कि युवा पाठकों को नीलू और उसके दोस्तों की कहानियों को पढ़ने में आनंद आएगा। 'प्रथम बुक्स' को इन किताबों को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करने के लिए आपका धन्यवाद! यह एक गेम चेंजर साबित हो सकता है। मुझे उम्मीद है कि शिक्षक और माता-पिता भी इनका इस्तेमाल करेंगे।"
–एस्थर डुफ्लो, अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार विजेता

एक पढ़ता भारत बनाने का उत्सव

प्रथम बुक्स ने देशभर के साझेदारों के साथ सहयोग को और गहरा करना जारी रखा ताकि उच्च गुणवत्ता वाला बाल साहित्य अधिक-से-अधिक बच्चों तक पहुँचाया जा सके, चाहे वे कहीं भी रहते हों।

2025 में हमने जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के साथ अपनी स्कूल आउटरीच पार्टनरशिप के 15 साल पूरे होने का भी जश्न मनाया। यह एक ऐसा सहयोग है जिसने कहानियों, विचारों और प्रेरणा को सीधे क्लासरूम तक पहुँचाया है। पिछले डेढ़ दशक में इस सहभागिता के माध्यम से 500 शिक्षण संस्थानों में 1,000 से अधिक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए गए जिससे 50,000 से ज़्यादा बच्चों तक पहुँच बनी। इन सत्रों ने बच्चों के लिए इतिहास, तकनीकी और विज्ञान की नई दुनिया के दरवाज़े खोल दिए। इस वर्ष अक्षता मूर्ति, कल्लोल भट्टाचार्जी और एम्बेसडर हर्वे डेल्फिन जैसे वक्ताओं ने हमारे बच्चों में रचनात्मकता तथा पढ़ने के प्रति प्रेम जगाने में हमारी मदद की।

झारखंड के गुमला पुस्तक मेले एवं दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले 2025 में उपस्थिति के माध्यम से हमारी पहुँच और भी विस्तृत हुई, जिससे शिक्षकों तथा समुदायों के लिए पुस्तकों व पठन अनुभवों तक पहुँच और भी सुदृढ़ हुई।

सरकारी साझेदारियों के माध्यम से पहुँच को सुदृढ़ बनाना

इस वर्ष प्रथम बुक्स ने 10 लाख 70 हज़ार चित्र-पुस्तकें वितरित कीं, जिनसे देश के लगभग 35 लाख बच्चों तक हमारी पहुँच बनी। झारखंड, तेलंगाना, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव के सामाजिक संगठनों व शिक्षा विभागों के साथ मिलकर हमने यह सुनिश्चित किया कि हमारी किताबें उन इलाकों की कक्षाओं व लर्निंग सेंटर्स तक पहुँचें, जहाँ शिक्षा सुविधाएँ सबसे कम हैं।

हमने कहानियों की किताबों के ज़रिए शुरुआती स्टेम शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा विभागों के साथ अपनी संस्थागत साझेदारियों को और गहरा करने पर काम किया। स्टोरीवीवर के स्टेम साक्षरता कार्यक्रम के माध्यम से हम यह दिखा पाए हैं कि चित्र-पुस्तकें प्रारंभिक शिक्षार्थियों में जिज्ञासा जगाने और स्टेम विचारधारा विकसित करने में कितनी प्रभावी हो सकती हैं। महाराष्ट्र में हमने पिंपरी-चिंचवाड़ नगर निगम के साथ मिलकर वहाँ के

नगर निगम स्कूलों में स्टेम आधारित एक पठन अभियान शुरू किया। इस अभियान में हर हफ्ते चित्र-पुस्तकों साथ-साथ स्टेम से जुड़ी व्यवहारिक गतिविधियाँ भी शामिल थीं, जिन्हें उपयोग में सरल, एक 'प्लग-एंड-प्ले' मॉड्यूल के ज़रिए बच्चों तक पहुँचाया गया। शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों को कहानियों में छिपे वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने और समझाने का प्रशिक्षण दिया गया और व्हाट्सएप ग्रुप आपसी सीख तथा तुरंत मदद के जीवंत मंच बन गए।

देने के आनंद के माध्यम से पहुँच को सुदृढ़ बनाना

PRATHAM BOOKS
donate-a-book

प्रथम बुक्स का 'डोनेट-ए-बुक' एक क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म है, जहाँ शिक्षक, लाइब्रेरियन, सामाजिक संगठन या फिर आम लोग बच्चों के लिए एक 'पोर्टेबल लाइब्रेरी' के रूप में, प्रथम बुक्स से 32 से ज़्यादा भारतीय भाषाओं में सस्ती व उच्च गुणवत्ता की चित्र-पुस्तकें पाने के लिए फंडरेज़र्स शुरू करते हैं। 'डोनेट-ए-बुक' को दस साल पहले दूर-दराज़ के इलाकों के बच्चों तक पुस्तकें पहुँचाने में सहायता के रूप में शुरू किया गया था। इसके माध्यम से इस वर्ष 'विलेज लैब फाउंडेशन' के फंडरेज़र्स की मदद से, नुब्रा घाटी में बच्चों की किताबों की पहली लाइब्रेरी शुरू हुई और अलग-अलग सामुदायिक स्थानों पर अंग्रेज़ी तथा भोटी भाषा की 2,000 चित्र-पुस्तकें रखीं गईं।

अन्य विशेष फंडरेज़र्स में आई.आई.एम. वीमेन बुक मैजिक फंड जिसने तीन राज्यों के 60 प्राइमरी स्कूलों को लाइब्रेरी प्रदान की और बेबीज़ विथ बुक्स रीड-ए-थोन शामिल हैं, जिसके तहत पुणे के भारती हॉस्पिटल के एन.आई.सी.यू. में अपने नवजात शिशुओं को पढ़कर सुनाने के लिए माताओं को सचित्र किताबें दी गईं।

दान उत्सव के दौरान, डोनेट-ए-बुक ने सेल्ज़फोर्स के साथ मिलकर 'सपनों की लाइब्रेरी' नाम से एक 'कर्मचारी दान मुहीम' चलाई। सेल्ज़फोर्स के 300 से ज़्यादा कर्मचारियों ने एक महीने से भी कम समय में छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड के ग्रामीण इलाकों में 4,000 से ज़्यादा ज़रूरतमंद बच्चों के लिए लाइब्रेरियाँ बनाने में मदद की।

आपका क्राउडफंडिंग दान कैसे बदलाव ला सकता है

अकसर यह कल्पना करना मुश्किल होता है कि क्राउडफंडिंग से मिले दान से कितना अंतर पैदा हो सकता है। इसलिए, यहाँ हम आपको उन 250 से ज़्यादा फंडरेज़र्स में से एक के बारे में बताना चाहेंगे, जो इस साल हमारे समर्थकों की दरियादिली की बदौलत पूरे हुए।

यह कहानी 'सैपलिंग्स लाइब्रेरी प्रोजेक्ट' के जेम्स तुंगलुट ने साझा की थी, जिन्होंने मणिपुर के चुराचाँदपुर में 200 बच्चों के लिए एक फंडरेज़र चलाया था।

चुराचाँदपुर में 'लैनात' नाम के एक बाल गृह में, जो जंगल वाली पहाड़ियों और हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों के बीच बसा हुआ है, बच्चों का एक समूह विशेष बिना कभी कोई एक भी वास्तविक पुस्तक किताब हाथ में लिए ही बड़ा हो गया था। सोने के समय पढ़ने-सुनाने के लिए कोई सचित्र किताबें नहीं थीं, कक्षा में कहानी सुनाने का कोई समय नहीं था और न ही वहाँ कोई लाइब्रेरी थी। अधिकतर बच्चे वहाँ हिंसा के कारण भागकर आए थे, जिनमें से कुछ ने माता-पिता को खो दिया था और कुछ अपने परिवारों से बिछड़ गए थे। उन्हें दुनिया के बारे में जो कुछ भी पता था, वह उन्होंने केवल आस-पास को देखकर ही सीखा था- कैंप, पहाड़ियाँ और सन्नाटा। जब 'प्रथम बुक्स' की तरफ से सचित्र किताबों की लाइब्रेरी वहाँ पहुँची तो कई बच्चों के लिए यह पहला ऐसा अवसर था, जब उन्होंने कोई ऐसी किताब देखी थी, जो न तो फटी हुई थी और न ही उस पर कुछ लिखा-पढ़ी हुई थी। कई बच्चों के लिए तो यह पहली ऐसी पुस्तक थी, जिसे उन्होंने अपने हाथों से छुआ था।

बच्चों ने कॉमन रूम के एक कोने को साफ कर लिया था। उन्हें लकड़ी की एक पुरानी अलमारी मिली, जिसे पोंछकर साफ किया गया और उस पर दान में मिली किताबें सजा दी गईं। यह केवल पढ़ने का एक कोना नहीं था, यह संभावनाओं का एक कोना था, कहानियों का, जिज्ञासा का, हँसी का और मन की शांति का। जिन बच्चों ने इतना कुछ खो दिया था, उनके लिए यह एक बड़ी दुनिया में झाँकने की पहली खिड़की थी। यह सब इसलिए शुरू हुआ कि हम उन्हें उनकी पहली किताब दे पाए।

जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने 'डोनेट-ए-बुक' को क्यों चुना, तो उन्होंने कहा:

"डोनेट-ए-बुक के बारे में मुझे जो बात सबसे ज़्यादा पसंद है, वह यह है कि यह बच्चों को वह चीज़ देती है, जिसे हममें से कई लोग बहुत साधारण समझ लेते हैं- अपनी दुनिया से परे एक नई दुनिया को खोजने का आनंद। एक एकलौती पुस्तक भी किसी बच्चे की कल्पना को उड़ान दे सकती है, उसे सुकून दे सकती है, उसके सपनों को पंख लगा सकती है या फिर भविष्य का ऐसा दरवाज़ा खोल सकती है जिसके बारे में उसने कभी सोचा भी न हो। यह मात्र साक्षरता की बात नहीं है, यह गरिमा, संभावना और उम्मीद की बात है। किसी बच्चे को अपनी पहली किताब हाथ में लिए हुए और यह महसूस करते देखना कि 'यह कहानी मेरे लिए है' अपने आप में एक बहुत ही शक्तिशाली अनुभव है। यही वह बात है जो इसे हर बार इतना सार्थक बनाती है।"

1100+ दानदाता

40.6 हज़ार चित्र-पुस्तकें वितरित

2.7 लाख बच्चों पर प्रभाव

समुदायों का उत्सव

376+ भाषाएँ

3.2 करोड़ पठन

64 हज़ार कहानियाँ

PRATHAM BOOKS
storyweaver

प्रथम बुक्स स्टोरीवीवर, बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रमाणित 'डिजिटल पब्लिक गुड' है, जिस पर कोई भी व्यक्ति सचित्र पुस्तकें पढ़ सकता है, लिख सकता है और उनका अनुवाद कर सकता है। अपने दसवें वर्ष में भी हमने पठन आनंद को हर किसी तक पहुँचाने के लिए विभिन्न संस्थाओं के साथ मिलकर काम करने (परिवेश में साझेदारी) का सिलसिला जारी रखा है। सरकार, नागरिक समाज संगठनों और ज़मीनी स्तर के अगुआओं के साथ मिलकर काम करते हुए हम उनकी पहुँच का लाभ उठाते हैं ताकि पढ़ने के इस अभियान में ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों को सम्मिलित किया जा सके।

राजस्थान के शिक्षा विभाग के साथ मिलकर, स्टोरीवीवर की चुनी हुई हिंदी पुस्तकें 'प्रखर राजस्थान पहल' का हिस्सा बनीं। इसके अंतर्गत एक महीने तक चले अभियान में 4,000 से ज़्यादा कक्षाओं में लगभग 35,000 बार किताबें पढ़ी गईं। एक्स्टेप के 'बचपन मनाओ' परिवेश के अंश के तौर पर, हमने इंटरैक्टिव वेबिनार और मास्टर क्लास के माध्यम से पढ़ने की आदत को बढ़ावा दिया। इन कार्यक्रमों में लाइब्रेरियन, शिक्षक, गैर-मुनाफा संस्थाएँ और अनुवादक एक साथ आए। इन गठबंधनों ने हमारे ब्रांड की आवाज़ को और बुलंद किया, हमारे नेटवर्क का विस्तार किया और 'आनंददायक व समावेशी पठन' के साझा उद्देश्य को आगे बढ़ाने के हमारे प्रयासों को और मज़बूत बनाया।

महाराष्ट्र के संभाजीनगर में उर्दू पढ़ने का आंदोलन शुरू करना

महाराष्ट्र के संभाजीनगर स्थित क्षेत्रीय अकादमिक प्राधिकरण (आर.ए.ए.) के शिक्षकों ने 'प्रथम बुक्स' की अनुवाद कार्यशालाओं में भाग लिया ताकि वे 80 से अधिक उर्दू सचित्र पुस्तकें तैयार कर सकें और उनका सक्रिय रूप से उपयोग कर सकें। उन्होंने अपनी कक्षाओं में 'स्टोरीवीवर' का उपयोग किया जिससे उनके विद्यार्थियों में पठन का एक जीवंत आंदोलन शुरू हो पाया। यह एक बेहतरीन उदाहरण है कि कैसे एक सामुदायिक अभ्यास में संस्थागत सहयोग, स्थानीय स्वामित्व और डिजिटल पहुँच का मेल बच्चों के पठन में एक स्थाई बदलाव लाने में सफल रहा।

एक दिन, एक कहानी : प्रथम बुक्स की प्रमुख सामुदायिक पठन की पहल

हर सितंबर में, हम ‘एक दिन, एक कहानी’ कार्यक्रम के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाते हैं। इस अवसर पर ‘रीडिंग चैंपियंस’ भारत और कई देशों के स्कूलों, लाइब्रेरियों से लेकर पार्कों और घरों तक में, कहानी सुनाने के सत्र आयोजित करते हैं। इस वर्ष जिन कहानियों को सबसे अधिक सराहा गया, वो थीं- लवलीन मिश्रा की ‘कैसे भगायें बुखार?’ (चित्र: प्रिया कुरियन, अनुवाद: शबनम मिनवाला) और नेहा सिंह व सबा ख़ान की ‘गोल!’ (चित्र: अलाफिया हसन और पायरो ड्रॉज़)। इन किताबों ने अलग-अलग समुदायों को एक-दूसरे के करीब ला दिया। 1,500 से अधिक रजिस्ट्रेशनों द्वारा ये कहानी सत्र भारत, सिंगापुर, दुबई, अमेरिका और श्रीलंका में आयोजित हुए। हमारे चैंपियंस ने 9,000 से अधिक सत्र आयोजित किए जिनका आनंद लगभग 60,000 बच्चों ने उठाया।

9,000 पठन सत्र

1,500 स्वयंसेवक

60 हज़ार बच्चों तक पहुँच

सम्मानों का उत्सव

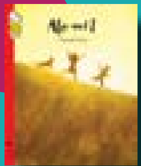

आफो और मैं

पराग सम्मान सूची 2024

मेहली गोभाई सर्वश्रेष्ठ बाल चित्रकार पुरस्कार (तृतीय संस्करण)– विजेता

बिनोद कनोडिया बाल पुस्तक पुरस्कार– लघुसूची, शुरुआती पाठक (अंग्रेज़ी) 4–7 वर्ष

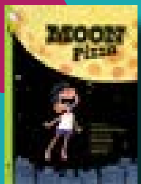

चाँद पिज़्ज़ा

कलिंग साहित्य उत्सव पुस्तक पुरस्कार 2024– लघुसूची

गप्पू गोला

पराग सम्मान सूची 2024

फिक्की प्रकाशन पुरस्कार 2023 – वर्ष की सर्वश्रेष्ठ बाल पुस्तक (10 वर्ष से कम, हिंदी)

ग्रेस

पराग सम्मान सूची 2024

हैलो सूरज!

पराग सम्मान सूची 2024

बिनोद कनोडिया बाल पुस्तक पुरस्कार 2023 – विजेता, शुरुआती पाठक (6–8 वर्ष)

ग्रीन लिटरेचर फेस्टिवल 2024 –
वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक (बाल श्रेणी)

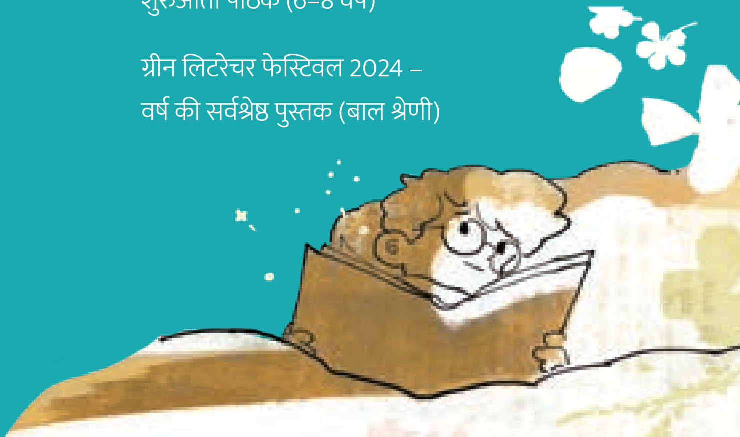

हमारा पुस्तकालय

पराग सम्मान सूची 2024

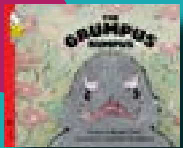

चिढ़ंचुमल

अट्टा गलाटा – बेंगलुरु साहित्य उत्सव पुस्तक पुरस्कार 2024 – सर्वश्रेष्ठ बाल चित्र पुस्तक चित्रांकन (लघुसूची)

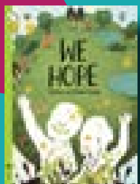

हमारी आशा

पराग सम्मान सूची 2024

जब सूर्या घर गई

बिनोद कनोडिया बाल पुस्तक पुरस्कार- लघुसूची

घर की याद

पराग सम्मान सूची 2024

फिक्की प्रकाशन पुरस्कार 2023 – वर्ष की सर्वश्रेष्ठ बाल पुस्तक (10 वर्ष से कम, अंग्रेज़ी)

नींव बुक अवाडर्स– लघुसूची

अंधेरे की आवाज़

वैली ऑफ वर्ड्स– लघुसूची, बाल साहित्य (5–10 वर्ष)

मेहली गोभाई सर्वश्रेष्ठ बाल चित्रकार पुरस्कार- लघुसूची

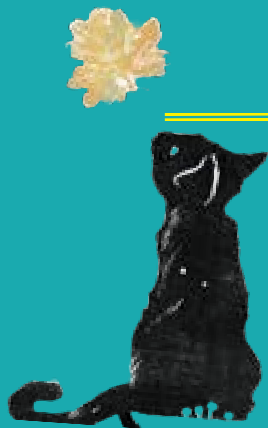

हमारे सहयोगियों का सम्मान

APRAAVA ENERGY

दूरbeen

EBARA ELLIOTT ENERGY

HT Parekh FOUNDATION

infoedge

P·A·N·I Foundation giving hope a chance

parag AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

UST

Wildlife Conservation Trust

[e] enphase ENERGY

FINANCIAL DECLARATION

Donors List consisting of donations received more than Rs. 50,000 in the year as well as Major Donors supported projects implemented during the year

	Name of the Donors
	Rohini Nilekani Philanthropies Foundation
	Caterpillar India Engineering Solutions Private Limited
	HT Parekh Foundation
	King Baudouin Foundation
	UK Online Giving Foundation
	Ashajyothi USA Inc
	Infoedge India Limited
	Shopify Commerce India Private Limited
	Wildlife Conservation Trust
	Enphase Solar Energy Private Limited
	Sir Dorabji Tata Trust
	United Way Bengaluru
	Elliott Ebara Turbomachinery India Pvt Ltd
	Kohima-Mariani Transmission Limited
Individual	Collis Ta'eed
	Nayara Energy Limited

	Name of the Donors
	Raay Foundation
Individual	Shweta Helen Robert
	Mayuresh Sharad Shirgoakar
	H & R Block India Private Limited
	The Online Giving Foundation
	Liferarian Association
Individual	Shubh Arambh Foundation
Individual	Balaji Radhakrishnan
Individual	Tarvinder Singh

List of individual donors

वित्तीय वर्ष 2024-25 का न्यासी मंडल

नाम	पद	बोर्ड बैठकों में उपस्थिति	न्यासियों द्वारा प्राप्त पारिश्रमिक/प्रतिपूर्ति
अशोक कामथ	न्यासी	4	शून्य
हरित नागपाल	न्यासी	2	शून्य
मीकाशी रमेश	न्यासी	1	शून्य
एम एस श्रीराम	न्यासी	3	शून्य
आर. श्रीराम	अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी	4	शून्य
श्रीकांत नादमुनि	न्यासी	4	शून्य
सुज़ैन सिंह	न्यासी	4	शून्य

वित्तीय वर्ष 2024-25 में न्यासी मंडल की 4 बार बैठकें हुई- 10 जुलाई 2024, 20 सितंबर 2024, 4 दिसंबर 2024 और 26 मार्च 2025 को। मंडल की सभी बैठकों के विवरण (मिनट्स) का दस्तावेज़ीकारण किया गया और उन्हें वितरित किया गया।

सुश्री परवीन वर्मा ने 26 मार्च 2025 को मंडल से इस्तीफा दे दिया।

Pratham Books

Balance sheet as at March 31, 2025

(Amount in Rupees)

Particulars	Sch No.	As at March 31, 2025 Amount	As at March 31, 2024 Amount
Liabilities			
Own Funds	1	12,46,50,623	11,47,17,119
Specified fund	2	39,63,649	73,66,019
Current Liabilities	3	1,44,79,398	1,60,15,456
Provisions	4	43,51,243	46,26,718
Other advances	5	1,46,959	21,65,806
Total		14,75,71,872	14,48,91,118
Assets			
Fixed Assets	6	20,40,055	19,80,392
Deposits	7	11,13,52,212	8,46,43,096
Debtors	8	44,26,783	24,70,991
Loans and advances	9	10,80,806	25,06,917
Stock of Books		92,88,505	83,22,808
Cash in Hand		29,099	15,762
Cash at Bank	10	1,88,44,153	4,44,69,456
Specified Fund Receivable	11	-	1,50,000
Other Current Assets	12	5,10,290	3,31,696
Total		14,75,71,872	14,48,91,118

Significant Accounting Policies and notes to accounts 22

for Pratham Books

R Sriram
Chairperson

Ashok R Kamath
Trustee

Bengaluru
September 24, 2025

As per our report of even date
for Singhvi Dev & Unni LLP
Chartered Accountants
Firm Reg No 003867S/ [illegible]

Shashi Kumar H D
Partner
Membership No.: 235431
UDIN: 25235431BMLABR2342

Bengaluru
September 24, 2025

Pratham Books

Income & Expenditure for the year ended March 31, 2025

(Amount in Rupees)

Particulars	Sch No.	For the period from 1st April 2024 to 31st March 2025	For the period from 1st April 2023 to 31st March 2024
Income			
Sale of Books	13	5,05,96,430	6,19,87,671
Donations received	14	5,11,70,541	50,15,192
Other Income	15	55,09,671	67,72,563
Income from Funds	16	2,32,27,098	4,63,99,569
Total (A)		13,05,03,811	14,79,26,727
Expenditure			
Book Development & StoryWeaver Expenses	17	5,34,74,022	2,91,23,257
Selling & Administrative Expenses	18	2,57,86,036	2,27,31,803
Staff Expenses	19	3,54,82,774	3,69,18,922
Promotional Expenses	20	6,43,438	2,47,544
Depreciation	6	5,97,799	5,57,823
Fund Expenditure	21	3,14,79,468	8,67,17,139
Total (B)		14,64,54,077	17,67,96,500
Excess of Income over expenditure (A-B)		50,81,134	(2,88,70,773)
Add:			
Opening Balance in Funds			
Opening Balance in Corpus Fund		11,47,17,121	10,11,58,543
Opening Balance in Specified Fund		73,66,019	5,03,21,352
Balance of Funds after appropriations			
Corpus Fund		12,46,55,024	11,47,17,120
Specified Fund		39,03,249	73,66,019
Total balance in Funds		12,86,14,273	13,03,83,139
Significant Accounting Policies and notes to accounts	22		

for Pratham Books

R Sriram
Chairperson

Ashok R Kamath
Trustee

As per our report of even date
for Singhvi Dev & Unni LLP
Chartered Accountants
Firm Reg No 003867S/ S200083

Shashi Kumar H D
Partner
Membership No.: 233401
UDIN: 25233401BMLAXX2342

Bengaluru
September 24, 2025

Bengaluru
September 24, 2025

Pratham Books

Receipts and Payments account for the year ended March 31, 2025

(Amount in Rupees)

Particulars	Sch no.	Year ended March 31, 2025 Amount	Year ended March 31, 2024 Amount
Receipts			
Balance brought forward			
- Cash on hand		13,763	13,440
- Cash at bank		4,44,84,456	5,95,10,284
Sale of Books		4,46,37,778	8,99,95,514
Donations		5,11,70,541	50,15,193
Other income		37,92,281	57,68,526
Specified funds		1,63,27,098	4,68,22,561
Fixed Deposits - Withdrawn		11,45,08,984	19,93,61,224
Gratuity Fund (LIC)		2,40,943	1,42,213
Income Tax Refund - Received (TDS)		14,27,910	-
Total		34,06,70,734	40,38,08,072
Payments			
Book Development Expenses		5,11,34,076	2,68,14,910
Selling, Administrative Expenses and Promotional Expenses		1,65,72,883	2,23,51,149
Staff Expenses		3,14,23,040	2,94,13,827
Fund Expenditure		3,17,34,689	9,14,45,364
Fixed assets Purchased		3,47,403	3,06,900
Fixed Deposits		17,10,35,501	18,76,17,567
Gratuity LIC Policy		8,00,000	10,00,000
Specific Grant Balance Refund		-	1,75,000
Earnest Money/Security Deposit		5,70,000	-
Balance carried forward			
- Cash on hand		79,099	13,763
- Cash at bank		1,69,64,153	4,44,84,456
Total		34,06,70,734	40,38,08,072
Significant Accounting Policies and notes to accounts	22		

for Pratham Books

R Sriram
Chairperson

Ashok R Kamath
Trustee

As per our report of even date
for Singhvi Dev & Unni LLP
Chartered Accountants
Firm Reg No 003867S/ S200083

Shashi Kumar H D
Partner
Membership No.: 233401
UDIN: 25233401BMLAXX2342

Bengaluru
September 24, 2025

Bengaluru
September 24, 2025

चित्र-सौजन्य

शीर्षक	चित्रांकन	लेखक
किताबों से भरा आशियाना	ओइन्द्री सी	जयराज सिंह
चींटियों भरा चाँद	प्रिया कुरियन	अपर्णा कपूर
आकाशगंगा में छेद!	छाया प्रभात	अनन्या दासगुप्ता
डायनोसॉर-डायनोसॉर	गिना जेम्ज़	अंजलि अलाप्पत
कबड्डी कबड्डी	काबिनी अमीन	काबिनी अमीन
एक ही आकाश तले सपने	ओगिन नयम	फॉस्टो आर्या डी सैंटिस
मैं बिल्ली नहीं हूँ	डेविड याम्बेम	पारो आनंद
डॉर्डलों ने बचाया ईंधन	ओइन्द्री सी	सी.जी. सैलामेंडर
टोकाटो की रंगीन दुनिया	कानातो जिमो	कानातो जिमो
हम क्या चाहते हैं...	गीतांजलि दास, जापानी श्याम, कामता ताहेड़, कृतिका जोशी, लाडो बाई, मीनाक्षी वायेदा	

इस रिपोर्ट को दृश्य रूप देने के लिए हम कनातो जिमो के हृदय से आभारी हैं।

PRATHAM BOOKS

A Book in Every Child's Hand

House No. 333, First Floor,
4th Cross OMBR Layout,
Banaswadi
T: 80- 42052574 / 4115 9009

www.prathambooks.org
www.storyweaver.org.in
www.donateabook.org.in